ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-5* Issue-8* November-2020
Anthology : The Research

वागड प्रदेश में जनजातिय अधिवास की आकारिकीय संरचना पर पर्यावरण का प्रभाव

Effect of Environment on Morphological Structure of Tribal Habitat In Vagad Region

Paper Submission: 10/11/2020, Date of Acceptance: 25/11/2020, Date of Publication: 26/11/2020

पी..एल. कटारा
एसोसिएट प्रोफेसर,
वीर बाला कालीबाई राजकीय कन्या महाविद्यालय, डूंरगपुर,
राजस्थान, भारत

सारांश

वागड प्रदेश में जनजातिय अधिवास की बनावट पूर्ण रूप से परम्परागत स्वरूप में चली आ रही है। यह क्षेत्र अरावली पर्वत श्रखंला का एक भाग है। जिसमें पाये जाने वाले ग्रमीण अधिवास बिखरे हुए पाये गये है। इन आवासो की बनावट व संरचना स्थानिय उपलब्ध प्राकृतिक संसाधनो पर आधारित है। तथा उनका आकार व स्वरूप पर मौसमी दषाओं का प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है।

In Vagad region, the design of tribal domicile is completely traditional. This region is a part of the Aravalli mountain range. In which the rural habitats found have been found scattered. The design and structure of these habitats is based on locally available natural resources. And the effect of seasonal conditions on their size and appearance is clearly visible.

मुख्य शब्द : आकारकीय सरंचना, छप्पन का मैदानी क्षेत्र, बोम, गृह निर्माण सामग्री, भौगोलिक परिस्थितियां।

Formal Structure, Fifty-Six Plain Area, Bom, House Building Material, Geographical Conditions.

प्रस्तावना

वांगड़ प्रदेश में जनजातीय अंधविश्वास पूर्ण रूप से बिखरे हुए पाए गए हैं। यह क्षेत्र अरावली पर्वत का हिस्सा होने से धरातलीय स्वरूप में विभिन्नताए पाई गई हैं। जनजातीय अंधविश्वास के वितरण स्थानिक विस्तार प्रतिरूप आंतरिक संरचना अग्रेशित जनसंख्या के सामाजिक सांस्कृतिक स्वरूप का अध्ययन किया गया है। इन अंधविश्वासों के उद्भव वृद्धि विकास बनावट निर्माण सामग्री आकार आकृति में प्राकृतिक कारकों का महत्वपूर्ण योगदान है।

अध्ययन क्षेत्र

दक्षिणी राजस्थान के वागड क्षेत्र में मानव अधिवासो के वितरण प्रतिरूप के अध्ययन में डूंगरपुर व बांसवाडा जिलो को सम्मिलित किया गया है। इस समस्त वागड क्षेत्र का विस्तार 23° 11' उत्तर से 24° 01' उत्तरी अंक्षाश एवं 73° 21' से 74° 47' पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है। इस क्षेत्र का कुल क्षेत्रफल 8922 वर्ग किलोमीटर है। वागड प्रदेश के पूर्वी भाग में मध्य प्रदेश का रतलाम जिला, पश्चिम में गुजरात का सांबर काटा जिला तथा दक्षिणी भाग में गुजरात का पंचमहल जिला, उत्तर पूर्व में प्रतापगढ एवं उत्तर में उदयपुर जिले की सीमाए प्रदेश की सीमाओ को आबद्ध करती है। यह प्रदेश जनजाति उपयोजना क्षेत्र का हिस्सा है। प्राचीन "वागड" प्रदेश में डूंगरपुर एवं बांसवाडा जिले तथा उदयपुर जिले का कुछ दक्षिणी भाग अर्थात "छप्पन" के मैदान के प्राकृतिक प्रदेश में विस्तृत है इस प्रदेश में अरावली पर्वत श्रृखंला फैली हुई जो प्राचीनतम पर्वत में से एक है। यह पर्वत माला प्राकृतिक वनस्पति से आवृत है। जो पर्यावरण की दृष्टि से महत्वपूर्ण है

विधि तंत्र

अध्ययन क्षेत्र में प्राथमिक आंकडो को प्रशनावली, अनुसूचियां भरवा कर प्राप्त करना साथ ही द्वितीय आंकडो को जिला सांख्यिकी रूप रेखा व भारतीय जनगणना विभाग द्वारा प्रकाशित जनसंख्या के आंकडो को प्राप्त कर अध्ययन करना। साथ ही स्थालाकृतिक मानचित्र का अध्ययन कर विश्लेषण करना है।

अध्ययन का उद्देश्य

1. अध्ययन क्षेत्र के धरातलीय स्परूप का अध्ययन करना।
2. अध्ययन क्षेत्र के भौगोलिक पर्यावरण का अध्ययन करना।
3. क्षेत्र में पाये जाने वाले प्राकृतिक तत्वो का अध्ययन करना।
4. मानव आवासो के प्रकार, बनावट व वितरण का पर्यावरण के साथ संबंधो का अध्ययन करना।

जनजातिय अधिवास की आकरिकीय संरचना

वागड प्रदेश में उष्णार्द्र जलवायु पायी जाती है। इस क्षेत्र में औसत से अधिक वर्षा होती है तापमान सामान्य से अधिक पाये जाते है शीतकाल में तापांक काफी निचे तक पहुच जाता है क्षेत्र मे भौगोलिक पर्यावरण का प्रभाव मानव के आवास निर्माण पर स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। यह क्षेत्र अरावली का हिस्सा है जिसमें अधिकांश क्षेत्र छोटी छोटी पहाडीयों से युक्त है यहां स्थालाकृतीक पारिस्थितियां निर्माण प्रक्रिया को प्रभावित करती है। जो भवन निर्माण में निम्न तथ्यो का योगदान रहता है।

1. धरातलीय उच्चावच होने के कारण पहाडी ढलानो पर आवास बनाये जाते है। समतल भागो में अपवाह तंत्र को ध्यान में रखकर आवास बनाये जाते है।
2. मकान हमेशा कम उपजाऊपन भूमि पर बनाये जाते है।
3. आवास बनाते समय वास्तुशास्त्र का ध्यान रखा जाता है।
4. भवनो का विन्यास आयताकार, वर्गाकार या चर्तुभुजाकार स्वरूप को ध्यान में रखकर निर्माण किया जाता है।
5. निर्माण प्रक्रिया में प्राकृतिक सम्पदा का उपयोग।
6. आवास निर्माण में आवागमन, संचार व जल स्त्रोत के आधार पर बनाये जाते है।

संरचना एंव बनावट के आधार पर आवासो की श्रेणीयां

वागड प्रदेश मे आवासीय मकानो में प्रयुक्त सामग्री स्थानीय उपलब्धता जिसमें मिट्टी (गारा), पत्थर ,मिट्टी का मिश्रण, ईट, रेत व सीमेंन्ट आदि का प्रयोग किया जाता है। इसमें भौगोलिक परिस्थितियां, धरातल का स्वरूप, पानी की उपलब्धता, नदी नाले से दुरी, सर्म्पक सडक, स्कूल व अस्पताल आदि कारक प्रभावित करते है। इस आधार पर आवासीय मकानो की श्रेणी निम्नानुसार है।

1. केवल मिट्टी या गारे का प्रयोग
2. घास फूस एवं खपरेल के मकान
3. केवल लकडीयां की दिवार या केलुपोश मकान
4. ईट युक्त दिवार मय केलुपोष मकान
5. ईट तथा पत्थर मिश्रित दिवार मय केलुपोश मकान
6. पक्का मकान

भवन निर्माण की आंतरिक सामग्री

इस क्षेत्र में भवन निर्माण सामग्री का उपयोग परंम्परागत से चला आ रहा है मकानो का स्वरूप, आकार व आकृति पर आदिकाल का प्रभाव है ग्रामीण क्षेत्रो में आवास का निर्माण व्यक्ति की आर्थिक व पैतृक तथ्यो का विशेष प्रभाव रहा है मकान के स्वरूप से परिवार की आर्थिक स्थिति का आंकलन होता है। क्षेत्र के अधिकांश आवास कच्चे है जिनमें आंतरिक भाग में मुख्यतया लकडी का प्रयोग किया जाता है। मकान में लकडी के गडर का प्रयोग किया जाता है जिसकी लम्बाई 18 से 20 फिट तक होती है यह गडर कोढे व बरामदे में प्रयुक्त किये जाते है। जिन पर मकान के छत का ढांचा तैयार किया जाता है यह गडर मकान की लम्बाई व चौडाई अनुरूप समान अन्तर पर डाले जाते है। मध्य के खम्भो व बाहरी दोनो दीवारो के नुकीले भागो को मिलाते हुए बल्ली डाली जाती है जिसे स्थानीय भाषा में बोम कहते है जो मकान का शीर्ष भाग होता है। इन बल्लीयों के ऊपरी भाग पर सागवान व निलगीरी की पतली बल्लीयां डालकर मकान का ऊपरी ढांचा तैयार कर लिया जाता है। उन पर केलु चढाकर मकान का स्परूप बनाया जाता है।

आकार व आकृति के अनुसार मकान की संरचना

ग्रामीण आवास अपने आकार में भिन्न भिन्न होते है उसकी संरचना या वास्तुकला मे भी भिन्नता रखते है उसी अनुसार निर्माण की सामग्री मे भी भिन्नता पायी जाती है मकान निर्माण के प्रयोग में लायी गयी सामग्री दोनो भौगोलिक पर्यावरण व मानव के मध्य संबंधो का प्रगाठ स्थिति को बतलाता है। क्षेत्र में यह पाया गया की ग्रामीण आवास में निर्माण सामग्री का उपयोग उपलब्ध संसाधनो (लकडी, पत्थर, मिट्टी, ईट, सीमेन्ट व घास फूस) के अनुसार ही करता है। यह सामग्री सरलता से प्रकृति प्रदत्त होती है। आवास के आकार व आकृति पर निम्न तत्वो का प्रभाव दिखाई देता है।

1. जलवायु
2. भूमि की बनावट
3. जल प्राप्ति की दशा
4. मिट्टी की कठोरता
5. आर्थिक दशा
6. सामाजिक प्रथाए
7. सांस्कृतिक और धार्मिक विश्वास
8. गृह निर्माण सामग्री

क्षेत्र में अधिकांश मकान एक कमरा वाले या एक कोठा मय बरामदा वाले ही पाये गये है। तथा मकान के आगे आंगन होता है यह मकान मिट्टी व लकडी के बनाये जाते है क्षेत्र में नौकरी पेशा, व्यापारी, राजनैतिक एवं सरपंच आदि वर्ग के लोग ही पक्के मकान एवं अर्द्धपक्के आवास बनाते है। आकार की दृष्टि से आवास की आंतरिक संरचना निम्नानुसार पायी जाती है।

1. एक कोठा ओर छप्पर के मकान।
2. एक कोठा मय बरामदे का मकान।
3. एक कोठा व आंगन के मकान।
4. दो कोठे, बरामदा व आंगन के मकान।
5. आगे पीछे दो कोठे के मकान।
6. बैठक कमरा, रसोई, पूजाकक्ष व आंगन के मकान।

एक कोठा मय बरामदा का आवास

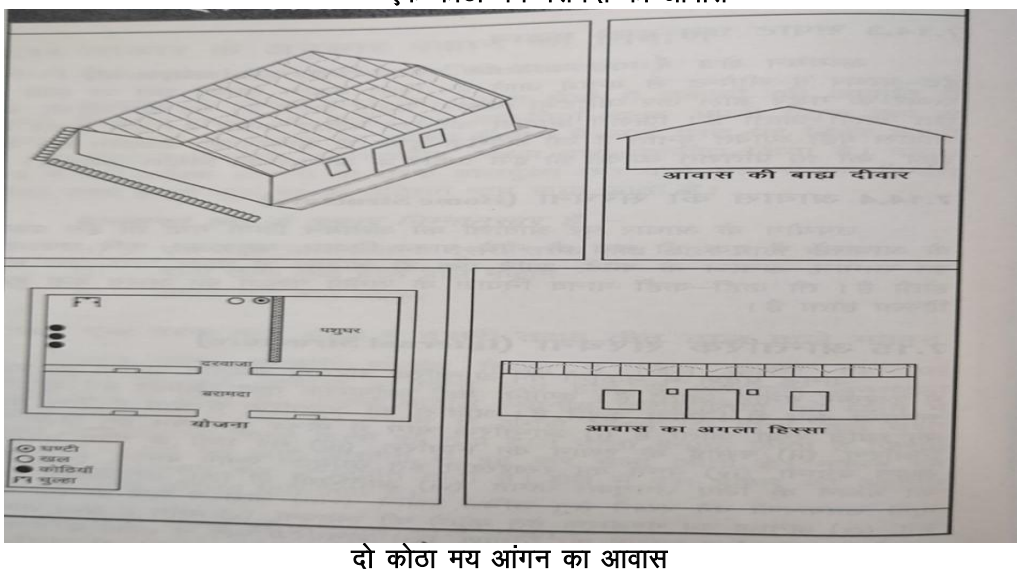

दो कोठा मय आंगन का आवास

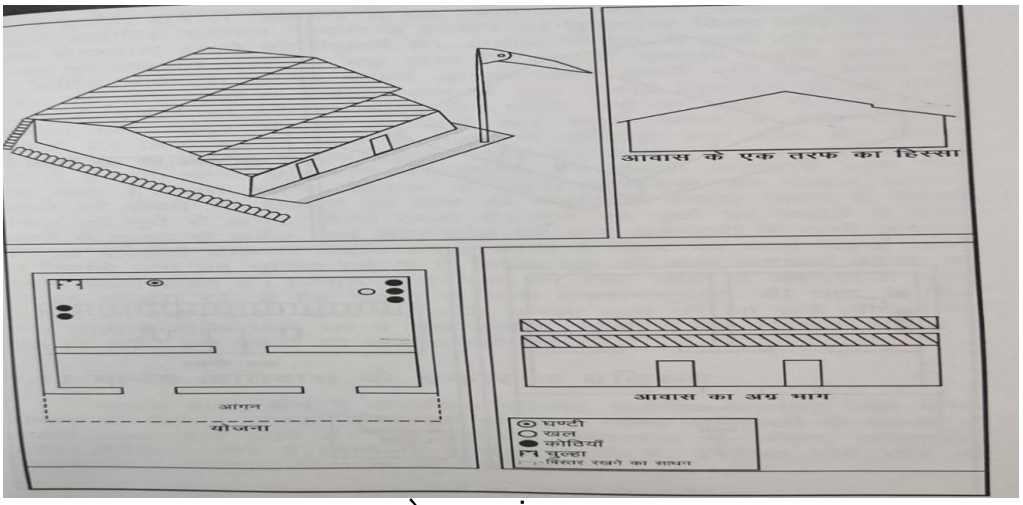

एक कोठा मय आंगन का आवास

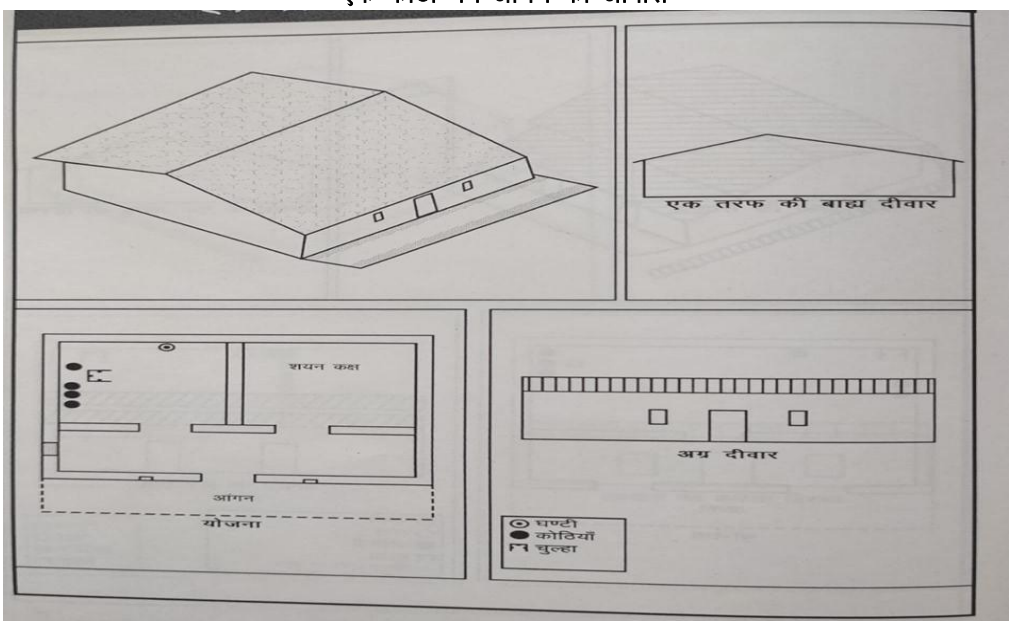

ग्रमीण क्षेत्र में मकानो की आकृति में काफी भिन्नताए पायी जाती है यह आकृतियां मानव अपनी पैतृक रूप से अपनाता आ रहा है मकान का स्वरूप निर्माण में लायी वस्तु व सामग्री पर निर्भर करती है तथा भौगोलिक कारक व धरातलीय स्वरूप द्वारा प्रभावित होती है साथ ही छत के अनुसार निम्न प्रकार के मकान पाये जाते है

1. एक तरफ मन्द ढाल व दुसरी तरफ तीव्र ढाल वाले मकान।
2. दोनो तरफ तीव्र ढाल वाले मकान।
3. सपाट छत वाले मकान।

निष्कर्ष

ग्रामीण क्षेत्र के आवास की बनावट उसकी आंतरिक संरचना, आकार व स्वरूप पर दृष्टिपात किया जाये तो उसमे ंका्फी समानताए मिलती है आवास निर्माण मौसमी दशाओं, धरातल का स्वरूप वं संसाधन की उपलब्धता को ध्यान मे रखकर किया जाता है। आवास की आकृति एवं स्वरूप पर पर्यावरण का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *Finch & Triwarthe – " Elements of Geography, Physical and Cultural" Chapter 28 P.543*
2. *Singh R.L – Settlement Geography is a recent most Sprout from the venerable Trunk of Human Geography.*
3. *Misra R.P – " Human Settlements are the Focal Centers within and around which men Creates his Culture.*
4. *Hudson, J.H. – Geography of settlements and Mcdonald and Evans Plymouth, U.K 1976*
5. *Dickinson, R.F – " Rural Settelements in German Lands" A.A.A.G. Val.39, 1949. PP. 229-263.*